



सत्यमेव जयते
ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार



घरेलू कचरे का प्रबंधन

एसएचजी बैठकों के लिए फैसिलिटेटर गाइड



दीनदयाल अंत्योदय योजना – राष्ट्रीय ग्राम आजीविका मिशन (डी ऐ वार्ड – एनआरएलएम)

ग्राम विकास मंत्रालय, भारत सरकार

प्रिय फेसिलिटेटर

घरेलू कचरे के प्रबंधन पर यह फेसिलिटेटर गाइड, फ्लिपबुक को प्रचारित करने और एसएचजी समूहों और अन्य सामुदायिक केंद्र के बीच प्रमुख संदेशों को प्रसारित करने में राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (एसआरएलएम) के अंतर्गत सभी फेसिलिटेटर की मदद करने के लिए डिज़ाइन की गई है। यह सत्र खाद्य, पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता (एफएनएचडब्ल्यू) पर एक प्रशिक्षण पैकेज का हिस्सा है जिसमें फ्लिप बुक, फेसिलिटेटर गाइड, पोस्टर, परामर्श कार्ड और स्टिकर एवं अन्य सामग्री शामिल हैं।

इस प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों के बीच में जानकारी देना कि घर के स्तर पर उत्पन्न होने वाले कूड़े का प्रबंधन एवं उससे जुड़े व्यवहार को बढ़ाना है। यह ज्ञान परिणामस्वरूप बेहतर व्यवहार और प्रथाओं को अपनाने में मदद कर सकता है जो घरेलू स्तर, आसपास के समुदायों और पर्यावरण की स्वच्छता में सुधार करेगा। हम सभी जानते हैं कि अच्छी स्वच्छता के परिणामस्वरूप बेहतर स्वास्थ्य और उच्च उत्पादकता होती है जिससे गरीबी में कमी आती है और जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है।

यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि यह प्रशिक्षण पैकेज, हालांकि एसएचजी महिलाओं के लिए है, किंतु पूरे परिवार के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोगी है। फ्लिपबुक के माध्यम से प्रत्येक सत्र के तहत प्रदान की गई जानकारी और इस गाइड को परिवार के लिए/बड़े लड़कों को एफएनएचडब्ल्यू पर इन प्रथाओं का पालन करने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है, उसकी व्यवस्था करना सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

इस व्यवहार को सिखाने की जिम्मेदारी केवल महिलाओं की नहीं होती है; परिवार में पुरुषों/पति/बड़े लड़कों को एफएनएचडब्ल्यू में इन प्रथाओं का पालन करने के लिए आवश्यक हर चीज प्रदान करनी चाहिए।

उद्देश्य

मॉड्यूल को पढ़ने के बाद, फेसिलिटेटर:

- घरेलू कचरा प्रबंधन के महत्व और लाभों की व्याख्या कर सकेंगे।
- घरेलू कचरे के पृथक्करण और सुरक्षित निपटान का सही तरीका बता पाएंगे।
- वे समझा पाएंगे कि घर में उत्पन्न अपशिष्ट जल को विभिन्न माध्यमों से कैसे व्यवस्थित किया जाए।

सत्र शुरू करें

इस प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को घर में अपशिष्ट/कचरा और अपशिष्ट जल का प्रबंधन कैसे करें और घर में उत्पन्न होने वाले कचरे का सही तरीके से निपटान कैसे करें, इस बारे में जागरूक किया जाएगा। यह सत्र विशेष रूप से घर के आसपास के परिवेश में सुधार लाने और घरेलू कचरा प्रबंधन पर सही ज्ञान प्राप्त करने के माध्यम से स्वच्छ रखने पर ध्यान केंद्रित करेगा।



केस स्टडी

जयेश को कोई भी फल खाने के बाद फलों के छिलकों को फर्श पर छोड़ने की आदत है। उसकी मां की भी यह आदत है कि वह सब्जियों को छीलकर और खाना पकाने के क्षेत्र के पास रखे कूड़ेदान में नहीं फेंकती है। अपनी पत्नी अनीता के बार-बार याद दिलाने के बावजूद कि इस्तेमाल किया हुआ पानी फूलों की क्यारियों में डाला जाए किंतु वो इस्तेमाल किया हुआ पानी आंगन में यह सोचकर फेंक देता है कि यह अपने आप सूख जाएगा। नतीजा यह होता है कि आंगन में पानी जमा हो जाता है और मच्छर पनपते हैं। इस वजह से घर में चारों ओर हर वक्त गंदगी रहती है।

दंपति का 1.5 वर्षीय बेटा अक्सर दस्त और कभी-कभी त्वचा पर चकत्ते के साथ बीमार पड़ने लगा है। जयेश को खुद त्वचा में कुछ संक्रमण हो रहा है और उसे डॉक्टर के पास जाना है। निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

- ▶ आपको क्या लगता है कि ऐसा क्यों हो रहा है?
- ▶ घर में चीजों को बेहतर बनाने के लिए क्या करना चाहिए?

नोट: प्रतिभागियों को यहां किसी भी उत्तर की व्याख्या न करें, बस सुनें कि उन्हें क्या कहना है।

चरण 1:

प्रतिभागियों से प्रश्नों के साथ चर्चा शुरू करें कि हमें अपने घर और उसके आस-पास को साफ क्यों रखना चाहिए तथा व्यक्तिगत और घरेलू स्तर पर क्या किया जाना चाहिए। इस बात पर जोर दें कि घरों के आसपास कचरा और गंदा पानी संक्रमण फैलाता है और बीमारी का कारण बन सकता है। गंदे पानी के प्रबंधन के लिए पानी के गड्ढे और नालियां, घरेलू कचरे के लिए उपयुक्त स्थानों पर कूड़ेदान और इस कचरे के उचित निपटान से इस पर पनपने वाली मक्खियों और मच्छरों से बचा जा सकता है, इस प्रकार संक्रमण और बीमारियों को रोका जा सकता है। ऐसा करने से छोटे बच्चों और घर के सभी परिवार के सदस्यों को संक्रामक रोगों से बचाया जा सकता है।

प्रतिभागियों को बताएं कि कुछ व्यवहारों को अपनाकर अस्वस्थ परिस्थितियों से होने वाली बीमारियों से बचा जा सकता है ये व्यवहार हैं:

- शौचालय का प्रयोग करें, बच्चों के मल का उचित निपटान करें और खुले में शौच से बचें।
- चप्पल पहनें, खासकर बाहर जाते समय या शौचालय जाते समय।
- शौचालय से वापस आने के बाद और अन्य महत्वपूर्ण समय पर अपने हाथ साबुन से धोएं।
- मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता रखें।
- भोजन और पानी की स्वच्छता और सुरक्षा उपायों का पालन करें।
- घरेलू स्तर पर सूखे और गीले कचरे का उचित प्रबंधन सुनिश्चित करें।

हम इस सत्र में घर पर उचित अपशिष्ट प्रबंधन के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे। **"स्वच्छता संबंधी व्यवहार"** सत्र में अन्य सभी प्रथाओं पर विस्तार से चर्चा की गई है, जिसका उल्लेख किया जाना चाहिए।

चरण 2:

प्रतिभागियों के साथ नीचे दिए गए प्रश्नों के साथ चर्चा शुरू करें और उनसे पूछें कि क्या वे जानते हैं कि घर पर कचरे को अलग किया जाना चाहिए और घरेलू स्तर पर कचरे के पृथक्करण पर अपने अनुभव, यदि कोई हो, साझा करने के लिए कहें।

घरेलू अपशिष्ट पृथक्करण का अर्थ मूल रूप से गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग रखना है, ताकि सूखे कचरे को रिसाइकिल किया जा सके और गीले कचरे से खाद बनाई जा सके। दोनों को अलग-अलग तरीके से निपटाने और पुनर्नवीनीकरण करने की आवश्यकता है। याद रखें कि गीला कचरा जैविक होता है और सूखा नहीं।

सूखा कचरा क्या है?

कागज, प्लास्टिक, धातु, कांच, रबर, थर्मोकोल, कपड़ा, चमड़ा, लकड़ी-ऐसी कोई भी चीज जिसे बिना विघटित हुए लंबे समय तक रखा जा सकता है।

गीला कचरा क्या है?

गीले कचरे में सब्जी और फलों के छिलके और टुकड़े, चाय की पत्ती, अंडे के छिलके, हड्डियों और अंतडियां, मछली के अपशिष्ट, साथ ही पका हुआ भोजन (शाकाहारी और मांसाहारी दोनों) शामिल हैं।



अपशिष्ट वस्तु वे हैं जिनका अपने वर्तमान स्वरूप में उपयोग नहीं किया जा सकता है और अनुपयोगी होने के कारण फेंक दी जाती हैं। यह संबंधित प्रबंधन विधियों के साथ ठोस या तरल हो सकता है। ठोस अपशिष्ट में रसोई, उद्यान, पशुशाला, कृषि और धातु, कागज, प्लास्टिक, कपड़ा आदि जैसी सामग्री शामिल हैं। वे जैविक और अकार्बनिक सामग्री हैं जिनका घरों, व्यापारिक और औद्योगिक प्रतिष्ठानों द्वारा उत्पादित कोई आर्थिक मूल्य नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश घरेलू कचरा जैविक है, जिसमें थोड़ा अकार्बनिक पदार्थ होता है, और यह गैर-विषाक्त होता है। पर्यावरण के अनुकूल होने के कारण, ग्रामीण क्षेत्रों में अपशिष्ट प्रबंधन के लिए खाद बनाना एक अत्यधिक उपयुक्त तरीका है।

तरल अपशिष्ट पानी और अन्य तरल पदार्थ हैं जो एक बार उपयोग किए जाते हैं और अब मानव उपभोग या किसी अन्य उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं हैं। अपशिष्ट जल को औद्योगिक और घरेलू रूप में उप-वर्गीकृत किया जा सकता है: औद्योगिक अपशिष्ट जल निर्माण प्रक्रियाओं, कारखानों आदि द्वारा उत्पन्न होता है और इसका निपटान करना मुश्किल होता है जबकि घरेलू अपशिष्ट जल में घरों, वाणिज्यिक परिसरों, होटलों और शैक्षणिक संस्थानों से निकलने वाला पानी शामिल होता है, और यह ज्यादातर पुनः उपयोग के लायक होता है।

चरण 3:

समूह को सूचित करें कि कुछ बिंदुओं को ध्यान में रखकर हम अपने घरों के कचरे का प्रबंधन कर सकते हैं। परिवार के सभी सदस्यों को इन बातों के बारे में पता होना चाहिए और इसे सुनिश्चित करने के लिए अपने तरीके से योगदान देना चाहिए, ताकि घर की महिलाओं पर अकेले बोझ न पड़े।



- सूखे और गीले कचरे के लिए उपयुक्त स्थानों पर अलग-अलग कूड़ेदान रखें।
- किसी भी खाद्य अपशिष्ट को कूड़ेदान में फेंकने से पहले, उसके पैकेजिंग को हटाना याद रखें और पैकेजिंग को उचित रूप से अलग फेंक दें।
- यदि संभव हो तो सूखे कचरे के संग्रह के लिए दो बैग रखें—एक कागज, प्लास्टिक और अन्य वस्तुओं के लिए जो पुनः प्रयोज्य हैं और एक घर के बाकी कचरे के लिए।
- रसोई के प्लास्टिक को साफ और सूखा रखें और सूखे कचरे के डिब्बे में डालें।
- कांच/प्लास्टिक के बर्तनों को धोकर रखें।
- गीला कचरा प्रतिदिन कूड़ा उठाने वाले के माध्यम से घर से बाहर भेजा जाना चाहिए या उसका निपटान किया जाना चाहिए।
- सप्ताह में कम से कम एक बार इकट्ठा किये सूखे कचरे को निपटान करें।
- माहवारी सम्बंधित कचरे को फेंकने के लिए एक पेपर बैग रखें, या इसे पेपर बैग में लपेट कर फेंक दें।

समूह के साथ चर्चा करें कि उनके इलाके और गांव में कचरा निपटान की क्या व्यवस्था है। क्या उनके पास ऐसी जगह है जहां सभी का कचरा फेंका जाता हो, इसे कितनी बार साफ किया जाता है, सफाई कौन करता है, क्या कोई कचरा संग्रहकर्ता है जो घर-घर आता है; क्या सड़कों की नियमित रूप से सफाई की जाती है, आदि।

चरण 4:

घरेलू कचरे के सुरक्षित निपटान पर उनकी समझ साझा करने के लिए सभी प्रतिभागियों के साथ चर्चा करें। समूह में यह समझ होनी चाहिए कि सूखा कचरा, गीला कचरा और अपशिष्ट जल के निपटान के तरीके अलग-अलग हैं और घर में दोनों के लिए पर्याप्त व्यवस्था करनी चाहिए। **सुरक्षित निपटान का सबसे अच्छा तरीका** कचरे को अलग अलग करना और खाद बनाना है। कचरे को **अलग करने** और **पुनः उपयोग** और **पुनर्चक्रण** के लिए सामग्री को अलग करने के बाद, अपशिष्ट सामग्री का निपटान किया जाना चाहिए। इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि अपशिष्ट निपटान हवा, भूजल, सतही जल और भूमि को प्रदूषित न करे।

घरेलू कचरे का सुरक्षित निपटान—कंपोस्टिंग/खाद बनाना

यह घर पर कचरे को निपटाने के प्रभावी तरीकों में से एक है, खासकर अगर घर में पोषण बगीचा या कोई हरा क्षेत्र है। इस विधि द्वारा उत्पादित खाद बिना किसी अतिरिक्त खर्च के खाद का सबसे प्राकृतिक रूप है और इसे बनाना एक सरल प्रक्रिया है—

- अपने रसोई के कचरे (सब्जियों के छिलके, फलों के छिलके, थोड़ी मात्रा में पका हुआ खाना) को एक बर्तन/कंटेनर में अलग करें।
- सूखे कार्बनिक पदार्थ (सूखे पत्ते, चूरा) को एक छोटे बर्तन/कंटेनर में इकट्ठा करें।
- एक बड़ा मिट्टी का बर्तन या बाल्टी लें और कंटेनर के चारों ओर विभिन्न स्तरों पर 4-5 छेद ड्रिल करें ताकि हवा अंदर जा सके। नीचे मिट्टी की एक परत के साथ पंक्तिबद्ध करें।
- अब सूखे कचरे (भूस, चूरा, सूखे पत्ते) के साथ गीले कचरे (खाद्य स्क्रेप, सब्जी और फलों के छिलके) को बारी-बारी से परतों में डालना शुरू करें।
- नमी और गर्मी बनाए रखने में मदद के लिए इस मिट्टी का बर्तन या बाल्टी को प्लास्टिक शीट या लकड़ी के तख्ते से ढक दें।



- हर कुछ दिनों में, इस बर्तन के अंदर इकट्ठा कचरे को एक दुकनी या बड़े डंडे की मदद से हिलाते रहे जिससे इसे हवा लगती रहे। यदि आपको लगता है कि ढेर बहुत अधिक सूखा है, तो थोड़ा पानी छिड़कें ताकि वह नम हो जाए।
- 2-3 महीने के भीतर, आपके ढेर में सूखी, गहरे भूरे और भुरभुरी और मिट्टी की महक वाली खाद बनना शुरू हो जानी चाहिए। यह आपकी हरी भूमि के लिए खाद के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

चरण 5:

अब घर के आसपास अपशिष्ट जल के संचय और स्वास्थ्य पर इसके प्रभावों की चर्चा शुरू करें।

किसी भी रुकावट से बचने के लिए रसोई, स्नानघर और अन्य धुलाई क्षेत्रों के गंदे जल को ठीक से बहाने की आवश्यकता है, जो मच्छरों और बीमारियों को फैलाने वाले कीड़ों के लिए मुख्य प्रजनन स्थल है। इस पानी को घर के किचन गार्डन में ले जाया जा सकता है या फिर बाहर सामुदायिक नाली से जोड़ा जा सकता है जिससे घर के भीतर पानी का जमाव नहीं होता।

रूके हुए जल में मच्छरों सहित माइक्रोबियल रोगजनकों और प्रजनन वैक्टर की उपस्थिति मानव स्वास्थ्य के लिए जोखिम पैदा करती है। यदि कोई बैक्टीरिया, वायरस, या अन्य सूक्ष्मजीवों जैसे कि जिआडिया और क्रिप्टोस्पोरिडियम से दूषित पानी को पीता है, तो इसके परिणामस्वरूप गंभीर बीमारियां हो सकती हैं।

मल या नाली से दूषित सतहों के सीधे संपर्क से गैस्ट्रोएंटेराइटिस जैसी बीमारियां हो सकती हैं।

अपशिष्ट जल का मुख्य रूप से तीन तरीकों से निपटान किया जा सकता है -

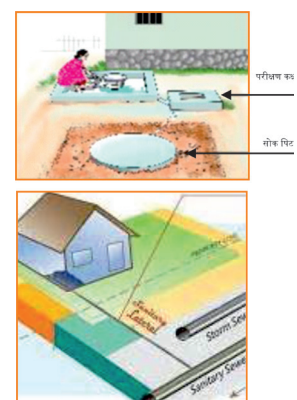
1. किचन गार्डन या अन्य हरे क्षेत्र के लिए पानी की व्यवस्था के लिए उन्हें नालियों से जोड़ना।
2. एक जल निकासी चैनल द्वारा घर के बाहर मुख्य समुदाय/गांव के नाले से जोड़ना जो सुरक्षित रूप से पानी का निपटान करता है।
3. घर में व्यक्तिगत सोखा गड्ढे मनरेगा के तहत बनाये जा सकते हैं।

चरण 6 :

अपशिष्ट जल के निपटान की एक सरल विधि के रूप में परिवार के भीतर सोक पिट को विकसित करके अपशिष्ट जल के प्रबंधन के प्रभावी तरीके पर समूह के साथ चर्चा शुरू करें। प्रतिभागियों को बताएं कि यह अपशिष्ट जल निपटान के लिए एक सुरक्षित और सरल तरीका है अन्यथा पानी बाहर बहकर खुली जगह में रुक सकता है और यह मच्छरों के प्रजनन स्थल के रूप में काम करेगा।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजनाओं के तहत घरेलू परिसरों और जल निकासी चैनलों में पानी के ठहराव को रोकने के लिए व्यक्तिगत घरेलू सोक पिट बनाये जाते हैं। आसानी से उपलब्ध सामग्री जैसे रेत, बजरी और ईंटों के छोटे टुकड़ों का उपयोग करके सोखा गड्ढे बनाए जा सकते हैं। इनके बारे में अधिक जानकारी के लिए संबंधित पंचायत अधिकारियों से संपर्क करें।

सामुदायिक सोक पिट का निर्माण भी किया जाता है, जिनका निर्माण सार्वजनिक नलों और फव्वारों, ओवरहेड टैंकों और हैंड-पंपों के पास किया जाता है। ये भूजल स्तर को रिचार्ज करने में भी मदद करते हैं।



चरण 7:

समूह को समझाएं कि स्वच्छ भारत अभियान में योगदान देने और उचित अपशिष्ट निपटान की दिशा में एक छोटा सा योगदान देने का एक आसान तरीका 3 R (आर) को अपनाना है—**कम करना** (Reduce), **पुनः उपयोग करना** (Re-use) और **पुनर्चक्रण** (Recycle) करना। कम करने का अर्थ है हमारे घरेलू कचरे को कम करना। **पुनः उपयोग** का अर्थ है उन चीजों का उपयोग करने के तरीके खोजना जिन्हें अन्यथा फेंक दिया गया होता; पुनर्चक्रण का अर्थ है पुरानी और अनुपयोगी वस्तु का कुछ नया और उपयोगी बनाना। उदाहरण के लिए, प्लास्टिक की बोतलों को फेंकने के बजाय, उनका उपयोग अपने घर को सजाने और अन्य प्लास्टिक शोपीस बनाने के लिए करें।



- खरीदारी करते समय प्लास्टिक और पेपर बैग का पुनः उपयोग किया जा सकता है। रसोई में प्लास्टिक की बोतलों और कंटेनरों का पुनः उपयोग किया जा सकता है।
- उपयोग करने योग्य वस्तुओं को फेंकने के बजाय उनकी मरम्मत करें। जिन चीजों को आप अब और नहीं चाहते उन्हें फेंक न दें। इसे किसी जरूरतमंद को दें या बेच दें। खाद के डिब्बे बनाने के लिए पुरानी लकड़ी और फूस का प्रयोग करें।
- टॉयलेटरीज़ जैसे शैम्पू की बोतलों को सेल चार्जिंग स्टेशन के रूप में, पुराने दूधब्रश को सफाई उपकरण आदि के रूप में पुनः उपयोग करें।

इसलिए यह समझना बहुत जरूरी है कि हमारे घरों में कचरे को कम करना बहुत जरूरी है; जो भी कचरा उत्पन्न होता है उसे अलग किया जाना चाहिए और ठीक से निपटाया जाना चाहिए; और घर में उत्पन्न अपशिष्ट जल को प्रभावी ढंग से उपयोग और निपटान करने की आवश्यकता है। इन बातों को ध्यान में रखने से परिवार के सदस्यों को संक्रमण संबंधी कई बीमारियों से बचाया जा सकता है।

स्वयं सहायता समूह की भूमिका

- ▶ समूह को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी सदस्य घरेलू स्तर पर कचरे के उचित प्रबंधन के महत्व को समझें।
- ▶ समूह के सदस्यों द्वारा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि घरों में कचरे को ठीक से अलग किया जाता है और गीले कचरे का निपटान कंपोस्टिंग द्वारा किया जाता है।
- ▶ समूह के सभी सदस्यों के परिवारों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके घरों में अपशिष्ट जल का ठहराव न हो और अपशिष्ट जल को नालियों के माध्यम से सही तरीके से प्रवाहित किया जाए।
- ▶ सभी एसएचजी सदस्यों के परिवार के सदस्यों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे अपने घरों में अपशिष्ट उत्पादन को कम से कम करें।

नोट: स्वयं सहायता समूह को उन सदस्यों का सहयोग करने के लिए तैयार रहना चाहिए जो समस्याओं का सामना करते हैं या इन संदेशों को व्यक्त करने और अपने परिवारों को समझाने में मुश्किल पाते हैं।

समापन: केस स्टडी के प्रश्नों और उनके उत्तरों पर फिर से विचार करके सत्र समाप्त करें। प्रतिभागियों को धन्यवाद करें।



खाद्य, पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता (FNHW) टूलकिट को राष्ट्रीय मिशन प्रबंधन इकाई (NMMU) द्वारा तकनीकी सहायता एजेंसी, TA-NRLM, प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल (PCI) के सहयोग से विकसित किया गया है तथा रोशनी-सेंटर ऑफ वूमेन कलेक्टिव्स लेड सोशल एक्शन, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान (NIRD), राज्य ग्रामीण विकास संस्थानों (SIRDs), नेशनल रिसोर्स पर्सन्स (NRPs), बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र के राज्य ग्रामीण आजीविका मिशनों (SRLMs), जीविका तकनीकी सहायता कार्यक्रम-प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल (JTSP-PCI) और ओडिशा, बिहार और छत्तीसगढ़ राज्यों की यूनिसेफ टीमों से सुझाव प्राप्त किये गए हैं।

सामग्री को अंतिम रूप देने हेतु, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (MoHFW), महिला और बाल विकास मंत्रालय (MoWCD), नेशनल सेंटर फॉर एक्सीलेंस एंड एडवांस्ड रिसर्च ऑन डाइट्स (NCEARD), अलाइव एंड थ्राइव (A&T), JTSP-PCI और UNICEF की मानक सामग्री को संदर्भित किया गया है।

दीनदयाल अंत्योदय योजना – राष्ट्रीय ग्राम आजीविका मिशन (डी ऐ वाई – एनआरएलएम)

ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार

7 वीं मंज़िल, एनडीसीसी बिल्डिंग-II, जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001

वेबसाइट: www.aajeevika.gov.in



सत्यमेव जयते
ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार

